

इतिहास

'गुप्त वंश' (तीसरी सदी)

- ❖ गुप्त शासक वैश्य थे (विष्णु उपासक)।
- ❖ ऐसा माना जाता है कि ये कुबाण शासकों के सामंत थे।
- ❖ इन्होंने बिहार के स्थान पर उत्तरप्रदेश को अधिक वरीयता दिया।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी उत्तरप्रदेश के कौशाम्बी को बनाया।
- ❖ इस वंश के संस्थापक श्री गुप्त थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक घटोत्कच था।
- ❖ इन दोनों शासकों ने सामंत के रूप में ही शासन किया। अतः इन्हें वास्तविक संस्थापक नहीं माना जाता है।
- ❖ इस वंश का वास्तविक संस्थापक चंद्रगुप्त-I थे। इन्होंने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया और इस उपलक्ष्य में उसने "राजा-रानी" प्रकार का सिक्का चलाया।

"समुद्रगुप्त"

- ❖ यह कुमार देवी का पुत्र था। अतः यह खुद को लिच्छवी दौहित्र (लिच्छवी का नाती) कहता था।
- ❖ इसके बचपन का नाम कांच था।
- ❖ समुद्रगुप्त की नीतियाँ आक्रामक तथा विस्तार वादी थीं। अतः यह अशोक के विपरीत था।
- ❖ इसने आर्यावर्त (उत्तर-भारत) के व राज्यों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- ❖ जबकि दक्षिणावर्त (दक्षिण भारत) के 12 राज्यों को पराजित कर दिया और उनसे Tax (कर) वसूलता रहा।
- ❖ इन्हीं विजय अभियान के कारण समुद्रगुप्त को "धरणी बंध" कहा जाता है।
- ❖ इतिहासकार "B.S. SMITH" ने समुद्रगुप्त की तुलना "नेपोलियन" से की है।
- ❖ पुराण में कहा गया है कि समुद्रगुप्त का घोड़ा 3 समुद्र का पानी पीता था, अर्थात् समस्त दक्षिण भारत समुद्र गुप्त के सामने नत-मस्तक था।
- ❖ श्रीलंका के शासक ने बौद्ध गया में मंदिर बनवाने के लिए अपना एक दूत समुद्रगुप्त के दरबार में भेजा।
- ❖ समुद्रगुप्त ने उसे मंदिर बनवाने की अनुमति दे दीया।
- ❖ समुद्रगुप्त के विजय अभियान की जानकारी "प्रयाग प्रशस्ती" अभिलेख से मिलती है।
- ❖ यह अभिलेख समुद्रगुप्त के दरबारी कवि तथा महासंघ विग्राहक (युद्ध एवं शांति का दूत) हरिसेन का है।
- ❖ समुद्र गुप्त ने कण्वचरित्र पुस्तक की रचना की जिस कारण इसे कविराज कहा जाता है।

- ❖ इसे सिक्कों पर वीणा बजाते हुए तथा सैनिक 'वैश-भूषा' में दिखाया गया है।
- ❖ समुद्रगुप्त के समय सबसे अधिक प्रचलित सिक्का मयूर शैली का सिक्का था।
- ❖ समुद्रगुप्त के बाद रामगुप्त शासक बना।
- ❖ यह एक अयोग्य शासक था।
- ❖ इसकी पत्नी का नाम देवी था।
- ❖ देवी ने रामगुप्त के छोटे भाई चंद्रगुप्त-II के साथ षड्यंत्र रच के खुद के पति रामगुप्त की हत्या करवा दी।
- ❖ इसकी जानकारी विशाखदत्त की पुस्तक देवी चंद्रगुप्तम् में मिलती है।

चंद्रगुप्त-II

- ❖ इसने शकों का अंत कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- ❖ विक्रमादित्य का अर्थ होता है, शूरवीर।
- ❖ इतिहास में कुल 14 शासकों ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की है।
- ❖ इसने चाँदी के सिक्के चलाए। यह न्याय के लिए प्रसिद्ध था।
- ❖ इसके न्याय का सिंहासन पत्थर का बना था।
- ❖ इसके समय सर्वाधिक विस्तार हिन्दू धर्म का हुआ।
- ❖ इसके दरबार में संस्कृत के 9 विद्वान रहते थे, जिन्हें "नवरत्न" कहा जाता था।
- ❖ नवरत्न में सबसे प्रमुख कालीदास, अमरदास, वराहमिहिर, धनवन्त्रि प्रसिद्ध थे।
- ❖ धनवन्त्रि वैद्य थे।
- ❖ चंद्रगुप्त-II के दरबार में चीनी बौद्ध विद्वान फाह्यान भारत आया।
- ❖ इसका यात्रा विवरण "फो-क्यू-की" है।
- ❖ चंद्रगुप्त द्वितीय के बाद अगला शासक कुमार गुप्त बना।
- ❖ इसने महायान शाखा के शिक्षा के लिए नालंदा विश्वविद्यालय बनवाया।
- ❖ इसे महायान शाखा का "OXFORD" कहा जाता है।
- ❖ विश्व का पहला विश्वविद्यालय "तक्षशिला" विश्व विद्यालय था। इसकी स्थापना राजा तक्ष ने करवाई थी।
- ❖ यह वर्तमान पाकिस्तान में रावलपिंडी जिला में स्थित है।
- ❖ विश्व का पहला "HOSTEL" सुविधा देने वाला विश्वविद्यालय "नालंदा विश्वविद्यालय" था।
- ❖ 1198 ई. में ऐबक का सेनापति बख्तियार खिलजी ने नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करवा दिया।
- ❖ कुमारगुप्त के बाद अगला शासक स्कंदगुप्त बना।

- ❖ स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- ❖ इसकी अलग से एक जूनागढ़ अभिलेख मिला है जिससे यह जानकारी मिलती है कि समुद्रगुप्त ने हुण्डों के आक्रमण को असफल कर दिया।
- ❖ इसके बाद गुप्तवंश में बहुत छोटे शासक हुए।
- ❖ भानू गुप्त के “एरण” अभिलेख से सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था।
- ❖ इस वंश के विनाश का कारण हुण्डों का आक्रमण था।
- ❖ हुण्ड आक्रमण के बाद गुप्त वंश छोटे-छोटे सामंतों में बंट गया, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण सामंत पुष्यभूति थे।

गुप्तकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

- ❖ गुप्तकाल की भाषा संस्कृत थी।
- ❖ वर्तमान हिन्दू धर्म का स्वरूप गुप्तकाल की देन है।
- ❖ गुप्तकाल की राजधानी कौशाम्बी थी।
- ❖ इस समय अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्त्रोत भू-राजस्व था।
- ❖ यह 1/4 से लेकर 1/6 हो सकता था।
- ❖ भू-राजस्व को हख्य (नगद) या मेय (अनाज) के रूप में दिया जा सकता है।
- ❖ इस समय शासन की सबसे बड़ी इकाई देश होती थी। देश का सर्वोच्च राजा होता था, जो न्याय का भी सर्वोच्च था।
- ❖ शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी, जो ग्रामीक के अधीन रहती थी।
- ❖ इस समय सबसे प्रमुख अधिकारी कुमार अमात्य था। जो वर्तमान (D.M.) के पद पर था।
- ❖ फाह्यान के अनुसार इस समय अस्पृश्यता (छुआ-छूत) थी।
- ❖ निम्न जाति के लोगों को चांडाल या अंत्यज कहा जाता था।
- ❖ इस समय स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था। वे देवदासी भी हो सकती थी।
- ❖ इस समय बाल-विवाह, पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा का भी प्रचलन था।
- ❖ इस समय वेश्यावृत्ति भी थी।
- ❖ वेश्यावृत्ति में लिप्त महिलाओं को गणिका या कुट्टनी कहा जाता था।
- ❖ इस समय गणित तथा ज्योतिष का सर्वाधिक विकास हुआ।
- ❖ अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ।
- ❖ महाराष्ट्र के इन गुफाओं की संख्या 29 है।
- ❖ 16, 17 तथा 19 नंबर की गुफाएँ गुप्तकाल की हैं।
- ❖ अजंता बौद्ध, जैन तथा हिन्दू तीनों के लिए प्रसिद्ध है।
- ❖ गुप्तकाल में ही मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाएँ बनाई गईं।
- ❖ गुप्तकाल में ही अफगानिस्तान के बामियान में स्थित पर्वतों को काटकर महात्मा बुद्ध की विश्व में सबसे ऊँची प्रतिमा

बनाई गई, किन्तु अफगानिस्तान के तालिबान आतंकवादियों ने इसे बम से उड़ा दिया।

“सुदर्शन झील”

क्र.सं.	राजा	कार्य	राज्यपाल
1.	चंद्रगुप्त मौर्य	निर्माण	पुष्यमित्र वैश्य
2.	अशोक	जीर्णोद्धार	तुसास्प
3.	रुद्रदामन	जीर्णोद्धार	सुविशाख
4.	स्कंदगुप्त	जीर्णोद्धार	पर्णदत्त

“हुण्ड”

- ❖ हुण्ड का क्षेत्र फारस (इरान से अफगानिस्तान तक) था।
- ❖ इनकी राजधानी अफगानिस्तान के बामियान में थी।
- ❖ तारामाण तथा मिहिरकुल दो प्रमुख हुण्ड आक्रमणकारी थे।
- ❖ मिहिरकुल बौद्ध विरोधी तथा मूर्तिभंजक (तोड़ने वाला) था।
- ❖ स्कंदगुप्त का जूनागढ़ स्थित अभिलेख से हुण्ड आक्रमण की जानकारी मिलती है।
- ❖ इसमें हुण्डों के लिए मलेच्छ शब्द का प्रयोग है।

पुष्यभूति वंश/वर्धन वंश

- ❖ इस वंश के संस्थापक पुष्यभूति वर्धन थे। जो गुप्तकाल में एक सामंत थे।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी हरियाणा के थानेश्वर को बनाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक प्रभाकर वर्धन थे।
- ❖ प्रभाकर वर्धन के 3 संतान थीं।
(i) राजवर्धन (ii) हर्षवर्धन (iii) राजश्री
- ❖ राजश्री का विवाह कन्नौज के राजा ग्रहवर्मन से हुआ।
- ❖ मालवा के शासक देवगुप्त ने ग्रहवर्मन की हत्या कर दी और राजश्री की हत्या करने का भी प्रयास किया। किन्तु राजश्री जंगल में भाग गई।
- ❖ राजवर्धन में देवगुप्त की हत्या कर दी।
- ❖ गौड़ (बंगाल) शासक शशांक ने राजवर्धन की हत्या कर दी। साथ ही इसने बौद्धी वक्ष को भी कटवा दिया।
- ❖ वर्तमान बौद्धी वक्ष छठी पीढ़ी का है।
- ❖ हर्षवर्धन ने शशांक की हत्या कर दी।
- ❖ हर्षवर्धन के सामने 2 चुनौती थी—
(i) राजश्री का पता लगाना। (ii) साम्राज्य को संभालना
- ❖ हर्षवर्धन ने दिवाकर नामक बौद्ध भिक्षुक के सहयोग से राजश्री का पता लगाया।
- ❖ हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया और अपने साम्राज्य को संभालने लगा।
- ❖ हर्षवर्धन ने कभी भी स्वयं को कन्नौज का राजा साबित नहीं किया बल्कि राजश्री का संरक्षक बनकर शासन किया।

- ❖ हर्षवर्धन साहित्य प्रेमी था। इसने 3 पुस्तकों की रचना की—
(1) नागानंद। (2) रत्नावली।
(3) प्रियदर्शिका।
- ❖ हर्षवर्धन के दरबारी कवि बाणभट्ट थे।
- ❖ इन्होंने 2 पुस्तकों की रचना की—
(1) कादम्बरी (2) हर्षचरित्र
- ❖ हर्षवर्धन को शिलादित्य कहा जाता है।
- ❖ इसके काल में चोर तथा डाकुओं का बोल-बाला था।
- ❖ इसके समय मथुरा सूती वस्त्र का केन्द्र था।
- ❖ इसके समय चीन का यात्री ह्वेनसांग भारत की यात्रा किया।
- ❖ 629 ई. में जब ह्वेनसांग आया था। नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति शीलभद्र थे।
- ❖ ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार नीति का पंडित तथा शाक्य मुनि कहा जाता है।
- ❖ इसने नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययन (student) तथा अध्यापन (teacher) का कार्य किया।
- ❖ ह्वेनसांग की विद्वता को देखकर हर्षवर्धन ने प्रत्येक 5 वर्ष पर प्रयाग में होने वाले महामोक्ष परिषद् का अध्यक्ष ह्वेनसांग को बना दिया, जिस कारण ब्राह्मणों ने हर्षवर्धन का विरोध किया।
- ❖ हर्षवर्धन हिन्दू था किन्तु महायान शाखा से प्रभावित था।
- ❖ इसके समय कन्नौज में बहुत बड़े बौद्ध सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- ❖ इसे 5वीं बौद्ध संगिती भी कहते हैं।
- ❖ हर्षवर्धन समस्त उत्तर भारत को जीत लिया था, किन्तु कश्मीर को अपने क्षेत्र में नहीं मिला पाया।
- ❖ हर्षवर्धन ने दक्षिण भारत अभियान प्रारंभ किया किन्तु नर्मदा नदी के तट पर दक्षिण भारत के चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय ने इसे पराजित कर दिया।
- ❖ इसकी जानकारी पुलकेशिन-II का कर्नाटक में स्थित "एहोर" अभिलेख से मिलती है।
- ❖ 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई।
- ❖ हर्षवर्धन की कोई संतान नहीं थी, जिस कारण वर्धन वंश का पतन हो गया।
- ❖ हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तर भारत में राजनीतिक शून्य (सन्नाटा) की स्थिति आ गई।
- ❖ इतिहास में हर्षवर्धन के मृत्यु को "युग-परिवर्तन" का काल कहते हैं।

दक्षिण-भारत

संगम काल (100 ई.-250 ई.)

- ❖ 100 ई. से 250 ई. के मध्य दक्षिण भारत में पांड राजाओं के संरक्षण में कवियों के 3 विशाल सम्मेलन बुलाए गए। इन सम्मेलन को ही तमिल भाषा में संगम कहते हैं।

(1) प्रथम संगम—

- ❖ यह दक्षिणी मदुरा में हुआ।
- ❖ इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की।
- ❖ इस सम्मेलन में 89 राजाओं ने भाग लिया।
- ❖ वर्तमान में दक्षिणी मदुरा जलमग्न हो गया है। जिस कारण इस संगम में लिखे गए साहित्य की कोई जानकारी नहीं है।

(2) द्वितीय संगम—

- ❖ यह कपाटपूरम (अलैव) में हुआ।
- ❖ प्रारंभ में इसकी अध्यक्षता अगस्त्य ऋषि ने की किन्तु बाद में "तोलकापियर" ने की।
- ❖ इसी सम्मेलन में "तोलकापियर" ने "तोलकापियम" नामक तमिल साहित्य की रचना की।
- ❖ इस संगम में 59 राजाओं ने हिस्सा लिया।

(3) तृतीय संगम— यह उत्तरी मदुरा (मदुरै) में हुआ।

- ❖ इसकी अध्यक्षता "नक्कियर" ने किया।
- ❖ इसमें 49 राजाओं ने हिस्सा लिया।
- ❖ इस संगम में लिखे गए साहित्य का भी कोई स्पष्ट साक्ष्य नहीं मिला है।

नोट—(1) तीनों ही सम्मेलन तमिलनाडु में किए गए हैं।

नोट—(2) अगस्त्य ऋषि (काशी) बनारस के रहने वाले थे जो तमिलनाडु में बस गए।

- ❖ अगस्त्य ऋषि को तमिल साहित्य का जनक माना जाता है।

"संगम काल के राज्य"

- ❖ कष्णा नदी के दक्षिण में अर्थात् भारत के सुदूर दक्षिण में 3 राज्यों का उदय हुआ।
(1) चेर
(2) पांड
(3) चोल
- ❖ संगम राज्य के बारे में जानकारी "इण्डिका", "अष्टाध्यायी" तथा "ऐतरेय-ब्राह्मण" ग्रंथ से मिलती हैं।

चेर वंश

- ❖ संगम काल के वंशों में सबसे प्राचीन चेर था। जबकि चेर का अर्थ होता है— पर्वतीय देश।
- ❖ ऐतरेय ब्राह्मण ग्रंथ में इसे चेरापद कहा गया है।
- ❖ अशोक के द्वितीय शिलालेख में इसे केरलपुत्र कहा गया है।
- ❖ इनका क्षेत्र केरल (मालाबार) में था।
- ❖ इनकी राजधानी बंजी/करूर थी।
- ❖ इनका राज्य चिन्ह धनुष था।
- ❖ चेर वंश का प्रथम शासक उदियन जरेल था।
- ❖ उदियन जरेल ने महाभारत युद्ध के सैनिकों को भोज करवाया था।
- ❖ अगला शासक शेनगुटवन था, इसे लाल-चेर भी कहते हैं।

- ❖ इसने पत्ति पूजा (कणगी पूजा) प्रारंभ किया। इस पूजा में उसने श्रीलंका तथा पड़ोस के राजाओं को भी आमंत्रित किया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक आदीगमान था, जिसने गन्ने की खेती प्रारंभ की।
- ❖ चेर वंश का अंतिम शासक कुडक्कईल जरेल था।
- ❖ दूसरी सदी के अंत में (190 ई.) चेर वंश समाप्त हो गया।

पाण्ड वंश

- ❖ इसका अर्थ होता है— प्राचीन देश।
- ❖ यह मात सत्तात्मक था तथा मोतियों के लिए प्रसिद्ध था।
- ❖ पांड राजाओं ने ही तीनों संगम का आयोजन किया था।
- ❖ पाण्ड वंश की प्रथम जानकारी मेगस्थनीज की पुस्तक “इण्डिका” से मिलती है।
- ❖ पाण्ड वंश का क्षेत्र तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में था।
- ❖ इनकी राजधानी मदुरै थी।
- ❖ इनका राजकीय चिह्न मछली (कार्प) था।
- ❖ पाण्ड वंश का प्रथम शासक नोडियोन था।
- ❖ इसने समुद्र पूजा प्रारंभ की।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक नेडूजेलियन था।
- ❖ इसने 290 ई. में हुए “तलैया लंगानम्” के युद्ध में चेर, चोल तथा 5 अन्य राजाओं को एक साथ पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक नल्लि वकोडन था।
- ❖ 5वीं सदी आते-आते पाण्ड वंश अस्तित्व विहिन हो गया।
- ❖ पाण्ड वंश के राजाओं का रोम के राजा से अच्छा संबंध था। इन्होंने अपने दूत रोम के राजा आगस्टसा के दरबार में भेजा था।
- ❖ पाण्ड वंश की राजधानी मदुरै को त्योहारों का शहर कहते हैं।
- ❖ यहाँ का मिनाक्षी मंदिर विश्व-प्रसिद्ध है।

चोल वंश

- ❖ इसका अर्थ होता है— नया देश।
- ❖ इसके बारे में प्रथम जानकारी पाणिनी की रचना अष्टाध्यायी से मिलती है।
- ❖ चोल साम्राज्य तमिलनाडु के पूर्वी भाग में था।
- ❖ इसकी राजधानी “उरई-ऊर” थी।
- ❖ इनका राजकीय चिह्न बाघ था।
- ❖ उरई-ऊर सूती वस्त्र के लिए विश्व में प्रसिद्ध था।
- ❖ ऐसा कहा जाता है कि इस समय के सूती वस्त्र साँप की केंचुली (पोआ) से भी पतले होते थे।
- ❖ चोल साम्राज्य कावेरी नदी के उपजाऊ मैदान में था।
- ❖ कहा जाता है, कि कावेरी नदी का मैदान इतना उपजाऊ था कि जितने क्षेत्र पर एक हाथी सोता था, उतने ही क्षेत्र पर इतना अनाज उगाया जा सकता है कि 1 वर्ष तक 7 लोगों का पेट भरा जा सकता है।

- ❖ चोल वंश का पहला शासक “उरवहप्पहरे” था।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक करिकाल था। इसने श्रीलंका जीत लिया और वहाँ से 12,000 द्वारा लाया और कावेरी नदी पर 160 km लंबा बाँध बनवाया।
- ❖ यह भारत का पहला बाँध था।
- ❖ इसे Grand बाँध कहते हैं।
- ❖ कारकाल ने पुहार नामक बंदरगाह बनवाया जिसे “कावेरी पटनम्” कहते हैं।
- ❖ एलारा तथा पेरुनरकिल्ली अन्य शासक था।
- ❖ चोल वंश 5वीं सदी आते-आते अत्यंत कमजोर हो गया और सामंती जीवन जीने लगा।
- ❖ 8वीं सदी में पुनः चोलों का उदय हुआ।

संगम कालीन आर्थिक जीवन

- ❖ संगम काल सूती वस्त्र, मसाला, मोती, कृषि तथा पशुपालन के लिए प्रसिद्ध था।
- ❖ इस समय के सूती वस्त्र पूरे विश्व में सबसे अधिक प्रसिद्ध था।

संगमकालीन व्यापार

- ❖ संगमकाल में रोम से सर्वाधिक व्यापार होते थे।
- ❖ तमिलनाडु के अरिकामेडू (पांडिचेरी) से रोम का सर्वाधिक व्यापार होता है।

संगमकालीन जाति व्यवस्था-

- ❖ संगमकाल में उत्तर-भारत के विपरीत जाति व्यवस्था थी।
- ❖ यहां सामंत तथा दास में समाज बँटा हुआ था।
- ❖ यहां वर्ण व्यवस्था या उच्च-नीच की जाति व्यवस्था नहीं थी।

संगम कालीन धार्मिक जीवन-

- ❖ संगमकाल में सबसे प्रमुख देवता मुरुगन थे, जिन्हें वर्तमान में सुब्रमण्यम कहा जाता है।
- ❖ दूसरे प्रमुख देवता कार्तिकी (गणेश जी के भाई) थे।

संगमकालीन बंदरगाह-

- ❖ संगमकाल के तीनों ही वंश के पास अपने-अपने बंदरगाह थे।
 - चेर-बंदरगाह— (बंदर-चेर)
 - चोल-बंदरगाह— पुहार तथा उरई
 - पांड-बंदरगाह — शालीयूर एवं कोरकाय।

संगमकालीन साहित्य-

- ❖ संगम साहित्य तमिल भाषा में लिखे गए।
- ❖ इन्हें तमिलकम् या द्रविड़ साहित्य भी कहते हैं, जो निम्नलिखित हैं।

- (1) **तोलकापियम-** इसका संबंध व्याकरण से है।
- (2) **तिरुक्कूराल या कूराल-** इसे तमिल साहित्य का बाइबल (एंजिल) कहते हैं।
- (3) **जीवक चिन्तामणि-**

- ❖ इसका संबंध जैन धर्म से है।
- (4) **शिल पादिकारम-** इसका संबंध जैन धर्म से है। इसमें नुपूर (पायल) की कहानी है।
- ❖ राजा कोवलन अपनी पत्नी कन्नगी को छोड़कर माध्वी नामक नर्तकी के प्रेम में फंस जाता है और अपने धर्म को लुटाने के बाद उसे पश्चाताप होता है और अपनी पत्नी के पास लौटता है। उसकी पत्नी कन्नगी ने उसे अपना एक पायल दिया, जिसे बेध कर वे मदूरै में व्यापार प्रारंभ किया, किन्तु कोवलन पर मदूरै की रानी का पायल चुराने का आरोप लगा दिया गया और उसे फांसी दी गई।
- ❖ कोवलन की पत्नी कन्नगी ने श्राप दे दिया, जिससे मदूरै शहर नष्ट हो गया।
- (5) **मणिमेखले-** इसका संबंध भी बौद्ध धर्म से है। इसमें कोवलन तथा माध्वी से उत्पन्न संतान मणिमेखलम् की चर्चा है, जिसने अंततः बौद्ध धर्म अपना लिया था।

वाकाटक वंश

- ❖ सातवाहन वंश के अंत के बाद उनके क्षेत्र पर वाकाटक वंश का आगमन हुआ।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी बरार को बनाया था।
- ❖ ये ब्राह्मण धर्म को मानते थे।
- ❖ इस वंश के संस्थापक विन्ध्य शक्ति थे।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक प्रवरसेन थे। इन्होंने 4 अश्वमेध यज्ञ तथा 1 वाजपेय यज्ञ कराया।
- ❖ इस वंश के शासक रुद्रसेन का विवाह प्रभावति से हुआ।
- ❖ प्रभावति चंद्रगुप्त-II तथा देवी की पुत्री थी।
- ❖ इस विवाह के कारण गुप्त तथा वाकाटक के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हुआ।
- ❖ समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति अभिलेख से वाकाटक की जानकारी नहीं मिलती है, क्योंकि इस अभिलेख में केवल जीते गए क्षेत्र की चर्चा है।
- ❖ वाकाटक की शक्ति धीरे-धीरे कमजोर हो गई और इनके स्थान पर चालुक्य वंश का उदय हो गया।

चालुक्य वंश (550 ई.-757 ई.)

सतपुड़ा पर्वत के दक्षिण में चालुक्य वंश का उदय हुआ। इनकी 3 शाखाएँ थी—

- (i) वातापी
- (ii) कल्याणी
- (iii) बेंगी

"वातापी का चालुक्य"

- ❖ वातापी का वर्तमान नाम बादामी है।
- ❖ यह तीनों चालुक्य में सबसे पश्चिम में स्थित था।
- ❖ इसी ने चालुक्य की नींव रखी थी।

- ❖ इस वंश के संस्थापक जयसिंह थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक कीर्तिवर्मन-I था। इसे चालुक्य का निर्माता कहा जाता है।
- ❖ पुलकेशिन-II इस वंश का सबसे प्रतापी शासक था।
- ❖ इसने नर्मदा नदी को पार करके कन्नौज के शासक हर्षवर्धन को पराजित कर दिया।
- ❖ इसने दक्षिण भारत में पल्लव शासक महेन्द्र वर्मन को पराजित कर दिया तथा उसकी राजधानी कांची को जीतकर कांचीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ पुलकेशिन-II ने दुबारा पल्लव पर आक्रमण किया। किन्तु पल्लव शासक नरसिंह वर्मन ने इसे पराजित कर दिया और उसका पीछा करते हुए उसकी राजधानी वातापी तक पहुँच गया एवं वातापी जीत कर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और पुलकेशियन-II की हत्या कर दी।
- ❖ पुलकेशिन-II के राजकीय कवि रविकिर्ती था।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक कीर्तिवर्मन-II
- ❖ कीर्तिवर्मन-II की हत्या दन्तिदुर्ग ने कर दी और इसके स्थान पर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना कर दी तथा चालुक्यों को अपना सामंत बना लिया।
- ❖ किन्तु चालुक्य के अंदर बदले की भावना थी। ये राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का इंतजार कर रहे थे। ताकि राष्ट्रकूट का अंत किया जा सके।
- ❖ "कल्याणी का चालुक्य"
- ❖ चालुक्य जो सामंत का जीवन जी रहे थे, राष्ट्रकूट की कमजोर स्थिति का फायदा उठा लिया और राष्ट्रकूट के अंतिम शासक कर्क-II की हत्या तैलप-II नामक चालुक्य ने कर दी।
- ❖ यहीं कल्याणी के चालुक्य का संस्थापक था।
- ❖ इस वंश का अगला शासक सोमेश्वर था। जिसने राजधानी मान्छेट से कल्याणी स्थानान्तरित किया, जिस कारण इस वंश का नाम कल्याणी का चालुक्य हो गया।
- ❖ सोमेश्वर को चोल शासक राजराम ने कई बार पराजित कर दिया जिससे अपमानित होकर सोमेश्वर ने तुंगभद्रा नदी में आत्महत्या कर ली।
- ❖ इस वंश का अगला शासक विक्रमादित्य-VI बना। यह एक कुशल योद्धा था।
- ❖ विक्रमादित्य-VI ने चोल के प्रभाव को रोक दिया। यह साहित्य प्रेमी था।
- ❖ इसके राजकीय कवि विल्हन थे।
- ❖ इन्होंने विक्रमांकदेव चरित्र नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ इसके दरबार में मित्राक्षर विज्ञानेश्वर रहते थे। जिन्होंने मित्राक्षरा नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक सोमेश्वर-IV थे।

“बेंगी का चालुक्य”

- ❖ यह चालुक्य की सबसे कमजोर शाखा थी, जो आंध्रप्रदेश के बेंगी में थी।
- ❖ इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन थे।
- ❖ इस वंश में कोई भी प्रतापी शासक नहीं हुआ।
- ❖ इस वंश का सबसे योग्य शासक विजयादित्य-III था।

पल्लव वंश

- ❖ इस वंश की राजधानी कांची थी।
- ❖ इस वंश के संस्थापक सिंह विष्णु थे।
- ❖ इसके दरबार में भर्वि नामक विद्वान रहते थे। जिन्होंने कीरातुल जुकियम नामक पुस्तक लिखी है।
- ❖ इस वंश का अगला शासक महेन्द्रवर्मन था। जिसे वातापी के चालुक्य शासक पुलकेशिन-II ने पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक नरसिंह वर्मन था। इसके समय पुनः पुलकेशिन-II ने आक्रमण किया, किन्तु पुलकेशिन-II को नरसिंहवर्मन ने मार दिया और उसकी राजधानी वातापी को जीतकर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ इस वंश का अगला शासक नरसिंहवर्मन-II था।
- ❖ इसके दरबार में दण्डि नामक विद्वान रहते थे, जिन्होंने दस कुमार चरित्रम नामक पुस्तक लिखी।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक अपराजित था। जिसे चोल शासक आदित्य-I ने पराजित कर दिया और पल्लव के स्थान पर चोल वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ 8वीं सदी के इस पल्लव वंश में शैव धर्म अधिक प्रचलित था।
- ❖ महेन्द्र वर्मन संगीत प्रेमी था।
- ❖ इसने कद्राचार्य को संगीत की शिक्षा दी थी।
- ❖ नरसिंह वर्मन-I ने महाबलीपुरम में एकश्मिय मंदिर बनवाया जिसे रथ मंदिर कहते हैं।
- ❖ नरसिंहवर्मन-I के दरबार में हवेनसांग आया था।
- ❖ नरसिंह वर्मन-II ने कांची में कैलाश मंदिर बनवाया। इसी के समय भारत में अरब आक्रमण प्रारंभ हो गए।

चोल वंश (9वीं सदी) - तंजौर

- ❖ चोल प्रारंभ में पल्लवों के सामंत थे।
- ❖ पल्लवों के ध्वंशावशेष पर चोल वंश की नींव रखी गई।
- ❖ 9वीं सदी में उभरा यह चोल वंश संगमकालीन चोल वंश की ही शाखा थी।
- ❖ चोल वंश के संस्थापक विजयालय थे। इन्हें चोल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
- ❖ इस वंश का अगला शासक आदित्य-I बना। इसने पल्लव शासक अपराजित को पराजित कर दिया। जिससे कि पल्लवों का अंत हो गया।
- ❖ चोल का अगला शासक परान्तक-I बना। इसने मदुरै जीतकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण कर ली।

- ❖ इसकी जानकारी उत्तरमेरुर अभिलेख से मिलती है।
- ❖ परान्तक-I को राष्ट्रकूट शासक कष्ण-III ने पराजित कर दिया।
- ❖ चोल वंश का अगल शासक राज-राज बना।
- ❖ इसने श्रीलंका के उत्तरी भाग को जीतकर चोल वंश में मिला लिया और मामूडी चोल की उपाधि धारण कर ली।
- ❖ इसने अपनी राजधानी तंजौर में “व हदेश्वर” मंदिर का निर्माण करवाया।
- ❖ अगला चोल शासक राजेन्द्र-I बना। यह चोल वंश का सबसे प्रतापी शासक था। इसने श्रीलंका को पूरी तरह जीत लिया और वहाँ की राजधानी अनुराधापुर पर आक्रमण करके वहाँ के शासक महेन्द्र-V को बंदी बना लिया।
- ❖ राजेन्द्र-I ने बंगाल के शासक महिपाल को पराजित कर दिया मंगईकोण्ड की उपाधि धारण कर ली और वहाँ से गंगाजल को लाया तथा अपनी राजधानी के बगल में एक नया शहर बसाया, जिसे गंगईकोण्ड चोलपुरम् कहते हैं।
- ❖ इस शहर में उसने एक तालाब बनवाया और उसमें गंगाजल मिला दिया और इस तालाब का नाम चोलगंगम् रखा।
- ❖ राजेन्द्र-I ने सुमात्रा (इण्डोनेशिया) पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक शैलेन्द्र को पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश के अंतिम शासक राजेन्द्र-III थे। जिनके बाद यह वंश स्वतः समाप्त हो गया।
- ❖ चोल काल का स्थानीय स्वशासन भारत का सबसे प्राचीन स्थानीय स्वशासन है। इस समय स्थानीय स्वशासन का चुनाव लौटरी पद्धति द्वारा होता था।
- ❖ चोलों की नौसेना सबसे शक्तिशाली थी।
- ❖ चोल काल में शिव मंदिरों का निर्माण हुआ, जो द्रविड़ शैली में बने थे।
- ❖ द्रविड़ शैली को विमान शैली भी कहते हैं।

राष्ट्रकूट वंश (7वीं-9वीं)

- ❖ इस वंश के संस्थापक दन्ति दुर्ग थे। इन्होंने वातापी के चालुक्य शासक कीर्ति वर्मन-II को हराकर राष्ट्र कूट की नींव रखी किन्तु उन्होंने चालुक्यों का पूरी तरह सफाया नहीं किया जो कि इनकी सबसे बड़ी भूल साबित हुई।
- ❖ दन्तिदुर्ग ने अपनी राजधानी मान्यखेट को बनाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक कष्ण-I को बनाया।
- ❖ जिसने महाराष्ट्र के एलोरा में कैलाश मंदिर बनवाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक ध्रुव बना, जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। त्रिपक्षीय संघर्ष 100 वर्षों तक चला। इसमें सर्वाधिक जीत राष्ट्रकूटों की हुई थी। किन्तु अंतिम विजय प्रतिहार की हुई। इनमें सर्वाधिक पराजय पाल शासकों की हुई।
- ❖ इस वंश का अगला शासक अमोधवर्ष बना। यह सबसे विद्वान शासक था। इसने कविराज मार्ग नामक पुस्तक लिखी।

इसने जीनसेन के प्रभाव में आकर जैन धर्म अपना लिया।

- ❖ कन्नड़ भाषा के त्रि-विद्वान कहे जाने वाले पन्न-पोन्न-रन्न रहते थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक इन्द्र-III बना। इसके दरबार में अलमसूदी नामक अरब यात्री आया था।
- ❖ अलमसूदी ने ही पहली बार मानसून का वर्णन किया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक कष्ण-III बना। इसने तत्कालीन के युद्ध में चोल शासक परान्तक-I को पराजित कर दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक कर्क-II था, जो एक अयोग्य शासक था। इसकी हत्या तैलप-II ने कर दी और चालुक्य वंश की पुनः स्थापना कर दी।
- ❖ तैलप-II का चालुक्य वंश कल्याणी का चालुक्य कहलाया।

पाल वंश (7वीं-11वीं)

- 7 से लेकर 11वीं सदी**— पाल वंश के शासक बौद्ध धर्म के ब्रजयान शाखा के अनुयायी थे।
- ❖ पाल वंश बिहार बंगाल के क्षेत्र में था।
 - ❖ पाल वंश की राजधानी मुंगेर थी।
 - ❖ पालवंश के संस्थापक गोपाल थे।
 - ❖ उन्होंने बिहार शरीफ में ओदंतपुरी विश्वविद्यालय की स्थापना की।
 - ❖ पाल वंश का अगला शासक धर्म पाल था।
 - ❖ इसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया। किन्तु इनकी पराजय हुई और इसी कारण पाल साम्राज्य का विकास रुका। धर्मपाल ने भागलपुर में विक्रमशीला विश्वविद्यालय तथा बांग्लादेश में सोनपुर महाविहार की स्थापना की।
 - ❖ अगला शासक देवपाल बना। इसी ने राजधानी मुंगेर को बनाया था। इसके दरबार में अरब यात्री सुलेमान आया था। इसने बंगाल को रुहमा शब्द से संबोधित किया था।
 - ❖ इस वंश का अगला शासक महिपाल बना।
 - ❖ महिपाल ने पाल वंश का विकास पुनः प्रारंभ किया। जिस कारण इसे पाल वंश का द्वितीय संस्थापक कहते हैं।
 - ❖ इसने आति दीपकर नामक बौद्ध भिक्षु के नेतृत्व में एक दूत मंडल तिब्बत में ब्रजयान शाखा के प्रचार के लिए भेजा। इसी के काल में चोल शासक राजेन्द्र-I ने बंगाल पर आक्रमण कर दिया, जिस कारण पाल वंश बिखर गया।
 - ❖ पाल वंश के अंतिम शासक मदनपाल थे। इनके मृत्यु के बाद पाल वंश का अंत हो गया। पाल वंश के स्थान पर बंगाल के क्षेत्र में सेन वंश का उदय हुआ।

सेन वंश

- ❖ इस वंश के संस्थापक सामंत सेन थे। इस वंश का अगला शासक विजय सेन था। विजय सेन को इस वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इस वंश के अगले शासक वल्लभ

सेन बनें। इन्हीं के काल में दानसागर तथा अद्भुत सागर नामक पुस्तक की रचना की गई। जिनके दरबार में जयदेव रहते थे।

- ❖ जयदेव ने गीत-गोविन्द नामक पुस्तक की रचना की।
- ❖ लक्ष्मण सेन के बाद कोई भी योग्य शासक नहीं बना, और 11वीं सदी के अंत में सेन वंश समाप्त हो गया।
- ❖ सेन वंश की राजधानी लखनऊवी (नदियाँ) थीं।

प्रतिहार वंश

- ❖ यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था। इस वंश के संस्थापक नागभट्ट थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक वत्सराज था। जिसने कन्नौज पर अधिकार के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया, और कन्नौज को अपने क्षेत्र में मिला लिया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक मिहिरभोज बना, जिसने कन्नौज को अपनी पूर्ण राजधानी बना दी।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक यशपाल बना। यशपाल के बाद यह वंश स्वतः समाप्त हो गया।

चंदेल वंश/जजाकभूक्ति वंश

- ❖ यह वंश मध्यप्रदेश के क्षेत्र में था। इसे जजाकभूक्ति वंश भी कहा जाता है। चंदेल शासक ने मंदिर निर्माण के क्षेत्र में बेसर शैली को जन्म दिया।
- ❖ बेसर शैली को मिश्रित शैली भी कहते हैं। मध्य भारत में बनने वाली अधिकांश मंदिरें बेसर शैली में बनी हैं।
- ❖ चंदेल शासकों को प्रारंभिक कालिंजर थी, किन्तु बाद में इसे खजुराहो स्थानान्तरित किया गया।
- ❖ इस वंश के संस्थापक नन्नुक थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक यशोवर्मन बना।
- ❖ इसने खजुराहो में विष्णु मंदिर बनवाया। इस मंदिर को खजुराहो का चतुर्भुज मंदिर भी कहते हैं।
- ❖ इस वंश का अगला शासक "धंग" था।
- ❖ यह शिव भगवान को मानता था। इसने खजुराहो में एक विशाल शिव मंदिर का निर्माण करवाया।
- ❖ इसे कंदरिया महादेव मंदिर के नाम से भी जानते हैं।
- ❖ इस मंदिर के परांगन में नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी बैल की मूर्ति है। जो कि सबसे बड़ी नंदी की प्रतिमा है।
- ❖ धंग ने प्रयाग में गंगा-यमुना के संगम पर जल समाधि ले ली।
- ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक विद्याधर था। जिसने गुजरात के शासक राज्यपाल की हत्या कर दी। क्योंकि इसने महमूद गजनवी का सामना नहीं किया बल्कि डर के भाग गया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक परिमार्दी था, जिसे पथ्वीराज चौहान (III) ने पराजित कर दिया और उसके क्षेत्र को मिला लिया।

- ❖ अंततः कुतुबद्दीन ऐबक ने पृथ्वी राज चौहान को हराकर दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

कुछ छोटे राजवंश

- (1) **मैत्रक वंश**— इसके संस्थापक महारक थे। यह वंश गुजरात के सौराष्ट्र में था। इसकी राजधानी वल्लभी थी, जो जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र थी।
- (2) **कलचूरी वंश**— (चेदी वंश)
 - ❖ यह मध्यप्रदेश के त्रिपुरी के क्षेत्र में था। इस वंश के संस्थापक कोकिल—I थे।
 - ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गंगेय देव था।
 - ❖ इसने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की।
- (3) **गौड़ वंश**—
 - ❖ यह बंगाल के क्षेत्र में था।
 - ❖ इस वंश का सबसे प्रतापी शासक शशांक था।
 - ❖ इसने राजवर्धन की हत्या कर दी तथा महाबोधी वक्ष को कटवाकर इसमें आग लगा दी।
 - ❖ इसकी हत्या हर्षवर्धन ने कर दी, जिसके बाद यह वंश स्वतः ही धीरे-धीरे समाप्त हो गया।
- (4) **पूर्वी गंग वंश**—
 - ❖ यह उड़ीसा तथा आंध्रप्रदेश में था।
 - ❖ इस वंश के संस्थापक आनन्द वर्मन ने पुरी में जगन्नाथ मंदिर बनवाया।
 - ❖ इस वंश के शासक नरसिंह—I ने कोणार्क में सूर्य मंदिर बनवाया, जिसे Black Pagoda भी कहते हैं।
 - ❖ इस वंश के शासक नरसिंह देव ने भुवनेश्वर में लिंगराज मंदिर बनवाया।

काकतिया वंश (तेलंगाना)

- ❖ यह तेलंगाना के क्षेत्र में एक छोटा-सा वंश था।
- ❖ इसके संस्थापक बीटा—I थे।
- ❖ इस वंश का अगला शासक रुद्र—I बना। जिसने अपनी राजधानी वारंगल को बनाया।
- ❖ इस वंश का अगला शासक प्रतापरुद्र देव था, जिसके सामने मल्लिक काफूर ने आक्रमण किया।
- ❖ इसने बिना लड़े अधीनता स्वीकार कर ली। और अपनी सोने की प्रतिमा को जंजीर लगाकर तथा कोहिनूर हीरा अल्लाउद्दीन के दरबार में भेंट किया।
- ❖ इसके बाद यह वंश समाप्त हो गया।
- ❖ इस पर अल्लाउद्दीन खिलजी का अधिकार हो गया।

यादव वंश-

- ❖ यह महाराष्ट्र के देवगिरि के क्षेत्र में था।
- ❖ इसके संस्थापक भिल्लम—V थे।
- ❖ इस वंश के शासक रामचंद्र देव को मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया। किन्तु इसकी वीरता को देखकर

अल्लाउद्दीन खिलजी ने इसे देवगिरि का जागीरदार बना दिया।

होयशल वंश-

- ❖ ये यादव वंश के सामंत थे। इन्होंने अपनी राजधानी द्वार समुद्र को बनाया।
- ❖ इस वंश के संस्थापक विष्णुवर्धन ने बेलूर में चेन्ना केशव मंदिर बनवाया।
- ❖ जिन्हें मल्लिक काफूर ने पराजित कर दिया और यह वंश समाप्त हो गया।

कश्मीर का इतिहास

- ❖ कश्मीर के इतिहास के बारे में जानकारी कल्हण की पुस्तक राजतरंगिणी से मिलती है।
- ❖ इसमें तीन वंशों की जानकारी है—
 - (i) कार्केट वंश
 - (ii) उत्पल वंश
 - (iii) लोहार वंश
- (i) **कार्केट वंश**— इस वंश के संस्थापक दुर्लभवर्धन थे। इनके दरबार में हेनसांग आया था।
 - ❖ इस वंश का शासक तारापिंड सबसे क्रूर शासक था।
 - ❖ इस वंश का सबसे योग्य शासक "ललितादित्य मुक्तापिंड" था। जिसने मालवा के चंदेल शासक यशोवर्मन को पराजित कर दिया।
 - ❖ इस वंश का अंतिम शासक जयपिंड था।
 - ❖ 810 ई. में जयपिंड की मृत्यु हो गई और 9वीं सदी के प्रारंभ में कार्केट वंश समाप्त हो गया।
- (ii) **उत्पल वंश**—
 - ❖ इस वंश के संस्थापक अवन्ति वर्मन थे। इन्होंने अवन्ति नामक नगर बनवाई।
 - ❖ इस साम्राज्य पर यहाँ की महारानी दिव्या (विद्या) का प्रभाव सर्वाधिक था।
 - ❖ इनकी मृत्यु के बाद इस वंश की बागडोर संग्रामराज के हाथ में आई। किन्तु संग्रामराज इस वंश का अंत करके लोहार वंश की स्थापना कर दी
- (iii) **लोहार वंश**—
 - ❖ इस वंश के संस्थापक संग्रामराज थे।
 - ❖ इस वंश का शासक 'हर्ष' एक योग्य शासक था।
 - ❖ इसके समय कश्मीर में भीषण अकाल पड़ा। इसने नीरों की उपाधि धारण की।
 - ❖ यह एक विद्वान शासक था। इसके दरबार में कल्हण नामक विद्वान रहते थे।
 - ❖ इस वंश का अगला शासक जयसिंह बना।
 - ❖ इन्हीं के काल में "राजतरंगिणी" पुस्तक पूर्ण हुई थी।
 - ❖ इसके बाद कश्मीर पर यवन आक्रमण हो गया।

- ❖ यवन आक्रमण के बाद कश्मीर पर तुर्क शासकों ने अधिकार कर लिया।
- ❖ सबसे योग्य तुर्क शासक 'जैनुल-आबे-दीन' थे।
- ❖ इन्हें कश्मीर का अकबर कहा जाता है।

राजपूत काल (800 से 1200)

पूर्व मध्यकाल (800-1200 ई.)

- ❖ राजपूत काल को पूर्व मध्य काल भी कहा जाता है।
- ❖ राजपूत वंश के उदय के बारे में चंद्रबरदाई की पुस्तक "पथ्वी राज रासो" से जानकारी मिलती है। इस पुस्तक के अनुसार माउन्ट आबू पर हुए एक अग्नि कुंड (हवन कुंड) से 4 वंशों का उदय हुआ, जो निम्नलिखित हैं—

- प्रतिहार
- परमार
- चालुक्य
- चौहान

(i) **प्रतिहार**— पीछे पढ़ चुके हैं।

(2) परमार वंश

- ❖ यह वंश मध्यप्रदेश (मालवा) के क्षेत्र में था।
- ❖ इस वंश के शासक उपेन्द्र थे।
- ❖ इस वंश का सबसे योग्य शासक राजा भोज था।
- ❖ इन्होंने अपनी राजधानी धारानगरी को बनाई जो संस्कृत का प्रमुख केन्द्र था।
- ❖ इस काल में धारा नगरी में एक विशाल सरस्वती मंदिर की स्थापना की गई।
- ❖ इस काल में ज्योतिष का विकास सर्वाधिक हुआ।
- ❖ अंततः इस क्षेत्र पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

गुजरात का चालुक्य (सोलंकी)

- ❖ यह वंश गुजरात के क्षेत्र में था।
- ❖ इसके संस्थापक मूल राज थे।
- ❖ इस वंश का शासक भीम-I के सामंत विमलसाह थे। जिन्होंने वस्तुपाल तथा तेजपाल नामक अधिकारियों द्वारा दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- ❖ महमूद गजनवी ने भीम-I के काल में ही सोमनाथ का मंदिर लूट लिया।
- ❖ इस वंश का प्रतापी शासक भीम-II था। जिसने 1178 ई. में मोहम्मद गौरी को हरा दिया।
- ❖ यह मोहम्मद गौरी की भारत में प्रथम पराजय थी।
- ❖ अंततः इस वंश पर दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया।

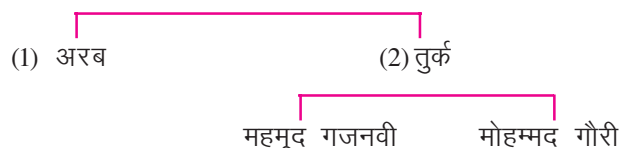
चौहान वंश

- ❖ इस वंश के संस्थापक वसुदेव (सिंह राज) थे।
- ❖ इस वंश के सबसे योग्य शासक अरुणोराज थे, जिनके दरबार में संस्कृत के विद्वान विग्रह राज-IV विसलदेव रहते थे, जिन्होंने हरिकेली नामक संस्कृत नाट्य लिखा है।

- ❖ इस वंश के अगले शासक पथ्वीराज (III) चौहान थे।
- ❖ इन्होंने जयचंद्र के साथ मिलकर तराईन के प्रथम (1191) युद्ध मोहम्मद गौरी को पराजित कर दिया।
- ❖ पथ्वीराज चौहान (III) ने जयचंद्र की बेटी संयोगिता का अपहरण कर लिया और उससे विवाह कर लिया। जिस कारण जयचंद्र और पथ्वीराज-III विरोधी हो गए।
- ❖ जयचंद्र ने मोहम्मद गौरी से मिलकर तराईन के द्वितीय युद्ध में (1192) पथ्वीराज चौहान (III) की हत्या कर दी।
- ❖ मोहम्मद गौरी ने 1194 में चंदवार के युद्ध में जयचंद्र की हत्या कर दी।

मध्यकालीन इतिहास

मुस्लिम आक्रमण



भारत पर अरब आक्रमण-

- ❖ भारतपर आक्रमण करने वाला पहला मुस्लिम अरब का मोहम्मद-बिन-कासिम था।
- ❖ इसने 712 ई. में रावर के युद्ध में सिंध के राजा दाहिर को पराजित कर दिया।
- ❖ इसने 713 ई. में मुल्तान को जीत लिया।
- ❖ इसने जीते हुए क्षेत्र की राजधानी "अलमन्सुरा" को बनाया।
- ❖ मोहम्मद-बिन-कासिम ने भारत में जजिया कर लगाया।
- ❖ जजिया गैर मुसमानों से लिया जाने वाला एक-प्रकार का सुरक्षात्मक कर था।
- ❖ M.B.K. में जजिया कर से 5 लोगों को मुक्त रखा।
- (1) बच्चा
- (2) बूढ़ा
- (3) ब्राह्मण
- (4) विकलांग
- (5) औरत
- (1) फिरोज-शाह-तुगलक ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगा दिया।
- (2) अकबर ने 1564 ई. में जजिया कर समाप्त कर दिया।
- (3) औरंगजेब ने 1679 ई. में पुनः जजिया कर लगा दिया।
- (4) जजिया कर को अंतिम रूप से मोहम्मद शाह (रंगीला बादशाह) ने समाप्त किया।

भारत पर तुर्क आक्रमण

तुर्क आक्रमण

- ❖ भारत पर पहला तुर्क आक्रमणकारी सुबुक्तगीन था।
- ❖ इसने 986 ई. में हिन्दू शाही वंश के शासक जयपाल को पराजित कर दिया।

- ❖ सुबुक्तगीन काबेटा महमूद गजनवी था, जो अफगान के गजनी का रहने वाला था। महमूद गजनवी 998 ई. में गद्दी पर बैठा।
- ❖ इसने (1001 ई. से 1027 ई. के बीच कुल 17 बार आक्रमण किए)।
- ❖ इसने 1018 ई. में कन्नौज को लूटा।
- ❖ 1025 ई. में सोमनाथ के मंदिर को लूटा।
- ❖ 1027 ई. में इसने जाट के विरुद्ध अपना अंतिम आक्रमण किया।
- ❖ महमूद गजनवी के साथ फिरदौसी, अलबरूनी तथा उब्बि जैसे इतिहासकार आए थे।
- ❖ उत्ति ने किताब-उल-यामिनी की रचना की थी।
- ❖ फिरदौसी ने शाहनामा लिखा, जबकि अलबरूनी ने किताबुल हिन्द लिखा।
- ❖ तहकीक-ए-हिन्द
- ❖ महमूद गजनवी को बूत शिकन (मूर्ति भंजक) कहा जाता है।

तुर्क आक्रमण का दूसरा चरण-

- ❖ तुर्क एक जनजाति थी जो अफगानिस्तान के क्षेत्र की थी।
- ❖ इसके दूसरे चरण का नेतृत्व मोहम्मद गौरी ने किया।
- ❖ मो. गौरी का मूल नाम मोईनुद्दीन मोहम्मद बिन शाम था। (शिहाबुद्दीन)
- ❖ 1173 ई. में यह शासक बना।
- ❖ 1175 ई. में इसने मुल्तान पर आक्रमण किया।
- ❖ 1178 ई. में इसने राजस्थान पर आक्रमण किया किन्तु वहाँ के शासक भीम-II ने इसे बुरी तरह से पराजित किया यह तुर्क आक्रमणकारियों की पहली पराजय थी।
- ❖ मोहम्मद गौरी लाहौर तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों को जितता गया। इसने लाहौर को केन्द्र बनाया।
- ❖ इसने पंजाब के भटिंडा पर जब अधिकार किया तो पृथ्वी राज चौहान-III से विवाद हो गया।
- ❖ 1191 ई. के तराईन के (I) युद्ध में पृथ्वी राज चौहान-III ने गौरी को पराजित कर दिया।
- ❖ 1192 ई. के तराईन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने जयचंद्र के सहयोग से पृथ्वी राज-III को पराजित कर दिया और उनकी हत्या कर दी।
- ❖ 1194 ई. के चंदावार के युद्ध में (फिरोजाबाद) उसने गढ़वाल शासक जयचंद्र को पराजित कर दिया।
- ❖ गौरी का सेनापति बख्तियार खिलजी ने 1198 ई. में नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया तथा बिहार शरीफ नामक शहर बसाया।
- ❖ 1205 ई. में गौरी ने अपना अंतिम अभियान पंजाब के खोखर जातियों के विरुद्ध किया।

- ❖ 1206 ई. में दमयक नामक स्थान पर रामलाल खोखर ने मोहम्मद गौरी की हत्या कर दी।
- मोहम्मद गौरी के तीन प्रमुख गुलाम थे—

- (1) कुतुबुद्दीन ऐबक
- (2) याल्दोज
- (3) कुबाजा।

दिल्ली सल्तनत (1206-1526 ई.)

- (1) वंश— गुलाब खिले तो सांस लो।
- (2) संस्थापक— ऐबक जल गया खीबो से
- (3) लंबा कार्यकाल— तुगलक सखी।

गुलाम वंश (1206 से 1290 ई.)

इस वंश को गुलाम वंश इसलिए कहते हैं क्योंकि इसके संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक मोहम्मद गौरी के गुलाम थे।

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210)

- ❖ इन्होंने सुल्तान की उपाधी नहीं धारण की बल्कि मलिक तथा सिपहसलार की उपाधि धारण की।
- ❖ ये गरीबों के प्रति दया का भाव रखते थे अतः इन्हें हातिम कहा गया।
- ❖ ये लाखों में दान देते थे। अतः इन्हें लाख बख्स भी कहते हैं।
- ❖ इन्हें पूरा कुरान याद था इसलिए इन्हें कुरान खान भी कहा जाता है।
- ❖ इनके दरबार में मिनहाज-उस-सिराज रहते थे, जिन्होंने तबकात-ए-नासरी पुस्तक लिखी है।
- ❖ इनके दरबार में हसन निजामी भी थे, जिन्होंने ताज-ऊल-नासिर पुस्तक लिखी है।
- ❖ ऐबक ने अजमेर विजय के बाद वहाँ पर ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद बनवायी।
- ❖ ऐसा माना जाता है कि यह किसी विद्यालय के स्थान पर बनाया गया है।
- ❖ ऐबक ने दिल्ली में कुब्तुल इस्लाम मस्जिद बनवायी जो भारत की पहली मस्जिद थी।
- ❖ ऐबक के गुरु बख्तियार काकी थे।
- ❖ ऐबक ने अफगानिस्तान के जाम मीनार से प्रेरित होकर दिल्ली (महरौली) में कुतुबमीनार बनवाई किन्तु पूरा नहीं कर सका।
- (1) ऐबक कुतुबमीनार को 2 मंजिल बनवाया था, जबकि शेष 3 मंजिल को इल्तुतमिश ने पूरा किया। मोहम्मद-बिन-तुगलक के समय इस मीनार पर बिजली गिर गयी। फिरोज-शाह-तुगलक ने इसका पुनर्निर्माण किया।
- (2) अल्लाउद्दीन खिजी इस मीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई मीनार बनवाना प्रारंभ किया, किन्तु इंजीनियरों की

गलती के कारण यह सफल नहीं हुआ।

- (3) अलाउद्दीन खिलजी ने कुब्तुल इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई-दरबार बनवाया।
- ❖ 1210 ई. में लाहौर में चौगान खेलते समय घोड़े से गिरने से कुतुबुद्दीन ऐबक की मौत हो गई।
- ❖ ऐबक का मकबरा लाहौर में है।
- ❖ ऐबक में अपनी राजधानी की लाहौर को बनाया था।

आरामशाह (1210-1211 ई.)

- ❖ यह ऐबक का उत्तराधिकारी था, किन्तु अयोग्य था।
- ❖ 1212 ई. में इल्तुतमिश ने इसे हटाकर खुद शासक बन गया।

इल्तुतमिश (1211-1236 ई.) शम्सी वंश

- ❖ इसे गुलाम का गुलाम कहते हैं, क्योंकि यह ऐबक का गुलाम था।
- ❖ 1215 के तराईन के III युद्ध में इसने याल्दोज को पराजित कर दिया।
- ❖ इसने सुल्तान की उपाधि धारण की तथा अपने नाम का खुतबा पढ़वाया।
- ❖ शासक बनने से पहले यह बदायूँ (U.P.) का सूबेदार था।
- ❖ इसने अपनी राजधानी दिल्ली को बनाया।
- ❖ इसने शासक बनने के लिए खलिफा अल मुनतसीर बिल्लाह से खिल्अत (Degree) हासिल की।
- ❖ इसने चाँदी का टंका तथा ताँबे का जीतल प्रारंभ किया।
- ❖ इल्तुतमिश को गुंबद तथा मकबरा निर्माण का जनक कहते हैं।
- ❖ इल्तुतमिश ने अपने पुत्र नसिरुद्दीन महमूद का मकबरा सुल्तान गढ़ी में बनवाया।
- ❖ यह शुद्ध इस्लामिक पद्धति पर बना भारत का पहला मकबरा था।
- ❖ इल्तुतमिश ने न्याय मांगने के लिए लाल वस्त्र पहनने की परंपरा चलवाया।
- ❖ इल्तुतमिश ने वेतन के बदले भूमि दिया जिसे इक्ता व्यवस्था कहते हैं।
- ❖ इसने 40 तुर्क सरदारों का एक सलाहकार परिषद् बनाया जिसे तुर्कियं चिहलगाँव या चालीसा दल कहते हैं।
- ❖ इसके समय जियाउद्दीन मांगबरनी का पीछा करते हुए चंगेज खाँ दिल्ली की सीमा तक पहुँच गया। अतः इल्तुतमिश ने जियाउद्दीन को अपनी शरण नहीं दी।
- ❖ इल्तुतमिश को शुद्ध इस्लामिक पद्धति का वास्तविक संस्थापक कहते हैं इसे गुलाम का गुलाम भी कहते हैं।
- ❖ 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गई। इसने अपने जीवन काल में ही रजिया सुल्तान को उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

- ❖ इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद 40 सरदारों ने रजिया को शासक न बनाकर स्वनुद्दीन को शासक बना दिया।
- ❖ रजिया ने न्याय के लिए लाल वस्त्र पहनकर मस्जिद के आगे चली गई और जनता के हस्तक्षेप के बाद वह शासिका बनी।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.)

- ❖ यह पहली महिला शासिका थी। यह पुरुषों की भांति वस्त्र पहनकर शासन करने लगी जो 40 तुर्क सरदारों को पसंद नहीं था।
- ❖ दिल्ली के मलिक याकूत के साथ रजिया के घनिष्ठ संबंध थे।
- ❖ तवरहिन्द (पंजाब) के इक्तादार मलिक अल्तुनिया ने रजिया की अधीनता मानने से इंकार कर दिया। जिस कारण रजिया ने उस पर आक्रमण कर दिया। किन्तु युद्ध में खुद को हारता देख रजिया ने अल्तुनिया से विवाह कर लिया। किन्तु रास्ते में लौटते समय डाकुओं के हमले में हरियाणा के कैथल में रजिया एवं अल्तुनिया की हत्या हो गई।
- ❖ दिल्ली में 40 सरदारों ने याकूत की हत्या कर दी।
- ❖ रजिया एक असफल शासिका साबित हुई और इसका प्रमुख कारण इसका महिला होना था।
- ❖ इतिहासकारों का कहना है कि अगर रजिया महिला न होती तो इसका नाम भारत के महान् शासकों में लिया जाता।

बहराम शाह (1240-1242 ई.)

अलाउद्दीन मसूद शाह (1242-1246 ई.)

नसीर-उद्दीन-शाह (1246-1266 ई.)

- ❖ यह एक मिर्त व्ययी (कम-खर्चीला) शासक था।
- ❖ यह टोपी सिलकर अपना जीवन-यापन करता था।
- ❖ इसने एक गुलाम को चालीसा दल में स्थान दिया यह गुलाम बलबन था।
- ❖ इसने बलबन को उलुग खाँ की उपाधि दीया।
- ❖ इसके समय बलबन की शक्तियाँ बहुत ही बढ़ गई थी।

बलबन (1266-1287 ई.)

- ❖ यह इरान का रहने वाला था।
- ❖ इसने शजदा तथा पैगोस जैसी इरानी पद्धति को भारत में लागू किया।
- ❖ इसने नौरोज त्यौहार भी प्रारंभ किया।
- ❖ इसने राजा के राजत्व सिद्धांत को लागू किया।
- ❖ इसने कहा कि राजा ईश्वर का प्रतिनिधि या छाया होता है।
- ❖ इसने "रक्त एवं लौह" की नीति अपनाई अर्थात् आक्रमण नीति को अपनाया।
- ❖ बलबन ने चालीसा दल को समाप्त कर दिया।
- ❖ बलबन ने (U.P.) के गण-मुक्तेश्वर में एक मस्जिद बनवायी।

- ❖ कैकूबार
 - ❖ अगला शासक कैकूबार बना जो एक आयोग्य शासक था। इसने एक वर्ष तक शासन किया।
 - ❖ गुलाम वंश का अंतिम शासक क्यूमर्श था।
- 1290 ई. में फिरोजशाह ने इसकी हत्या कर दी, जिसे जलालुद्दीन खिलजी भी कहते हैं।
1. कुतुबुद्दीन एबक
 2. आरामशाह
 3. इल्तुतमिश
 4. रुकनुद्दीन
 5. रजिया सुल्तान
 6. बहराम शाह
 7. अलाउद्दीन मसूद शाह
 8. नसीर-उ-द्दीन शाह
 9. बलबन/उल्लुग खां
 10. कैकूबार
 11. क्यूमर्श

खिलजी वंश (1290-1320 ई.)

जलालु-द्दीन-फिरोज खिलजी (1290-1296 ई.)

- ❖ खिलजी वंश के संस्थापक जलालु-द्दीन फिरोज खिलजी थे।
- ❖ इन्होंने जनता के इच्छाओं के अनुरूप ही शासन किया। ये एक उदारवादी शासक थे।
- ❖ इन्होंने दक्षिण भारत विजय के लिए अपने भतीजा (दामाद) अलाउद्दीन खिलजी को भेजा।
- ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण भारत को जीतकर वहाँ से अत्यधिक धन लूटा।
- ❖ जलालुद्दीन ने जब इससे धन का हिसाब मांगा तो इसने उसकी हत्या कर दी।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.)

- ❖ इसके बचपन का नाम अली गुर्शप्प था।
- ❖ इसने सिकंदर की भांति विश्व विजय का अभियान चलाया। अतः इसे द्वितीय सिकंदर या सिकंदरए-सानी कहते हैं।
- ❖ इसने खलिफा के पद को मान्यता दीया।
- ❖ यह एक नया धर्म चलाना चाहता था। किन्तु उलेमा (विद्वान मौलाना) के कहने पर इसने यह निर्णय बदल दिया।
- ❖ इसने कुतुबमीनार के प्रतिद्वंद्वी मीनार के रूप में अलाई-मीनार बनवाना प्रारंभ किया परन्तु वह बहुत छोटा बन पाया।
- ❖ इसने कुब्तुल-इस्लाम मस्जिद के प्रवेश द्वार के रूप में अलाई दरबार नामक Gate बनवाया।
- ❖ इसने मूल्य नियंत्रण के लिए बाजार प्रणाली को लाया और

सार्वजनिक वितरण प्रणाली को लागू किया।

- ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों की पहचान के लिए घोड़ा दागने की परंपरा लागू की।

इसने शासक बनने के बाद 4 घोषणाएँ की।

- (1) स्थायी गुप्तचर की स्थापना
 - (2) दान में दी गई भूमि को खालसा भूमि (सरकारी भूमि) में परिवर्तन
 - (3) मद्यपान (नशा/शराब) पर प्रतिबंध
 - (4) छोटे त्योहार तथा अमीरों के मिलने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- इसके समय 4 प्रमुख कर थे—

- (1) **जजिया**— यह गैर मुसलमानों से लिया जाता था।
- (2) **जकात**— यह मुसलमानों के आय पर लिया जाता था।
- (3) **खरात**— यह मुसलमानों का भूमि कर था।
- (4) **खुम्स**— यह सैनिकों से लूट पर लिया जाने वाला कर था। मकान पर घरी नामक कर तथा चारागाह पर चरी नामक कर लिया जाता था।

अलाउद्दीन खिलजी के विभाग-

- (i) दीवाने आरिज— सैन्य विभाग
- (ii) दीवाने इंशा— शाही आदेशों को पालन करवाना/पत्राचार विभाग
- (iii) दीवाने वजारत/विसारत— वजीर/P.M.
यह प्रधानमंत्री का पद था, जो वजीर के नियंत्रण में था। यह सबसे महत्वपूर्ण पद था।
- (iv) दीवाने (सातल)— यह विदेश विभाग था + धार्मिक मामलों।
- (v) दीवाने रियासत— यह बाजार पर नियंत्रण रखता था।

अलाउद्दीन खिलजी का सैन्य अभियान-

- ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने उत्तर-भारत तथा दक्षिण-भारत दोनों का अभियान किया।
- ❖ इसके समय सर्वाधिक मंगोल आक्रमण हुए। इस आक्रमण के कारण इसकी उत्तरी सीमा असुरक्षित हो गई।
- ❖ अलाउद्दीन, खिलजी ने व्यापार के लिए समुद्री मार्ग पर ध्यान दिया और इस उद्देश्य से 1297 ई. में गुजरात के शासक कर्ण देव को पराजित कर दिया। इस आक्रमण का नेतृत्व नुसरत खां कर रहे थे। इसी दौरान 1000 दिनार में मलिक काफूर (चंदराम) नामक हिजड़ा को खरीदा गया।
- ❖ मलिक काफूर को हजार दिनारी भी कहते हैं।
- ❖ गुजरात मार्ग में राजस्थान के शासक बाधा बन रहे थे।
- ❖ 1301 ई. में अलाउद्दीन ने रणथम्भौर जीता।
- ❖ 1303 ई. में अलाउद्दीन ने चित्तौड़ जीता।
- ❖ चित्तौड़ अभियान अलाउद्दीन ने रानी पद्मावति के लिए किया और यहाँ के राजा रतन सिंह को पराजित कर दिया, किन्तु चित्तौड़ की महिलाओं ने जौहर कर लिया।

- ❖ राजपूत महिलाएँ विदेशी आक्रमण से स्वयं के स्वाभिमान की रक्षा के लिए जलती आग में कूद जाती थी, जिसे जौहर कहते हैं।
- ❖ अलाउद्दीन ने दक्षिण-भारत विजय की जिम्मेदारी मलिक काफूर को दी।
- ❖ मलिक काफूर ने 1307 ई. में देवगिरि के शासक रामचंद्र देव को पराजित कर दिया। किन्तु रामचंद्र देव की वीरता को देखकर अलाउद्दीन ने उसे गुजरात के नौसारी का जागीरदार बना दिया।
- ❖ 1309 ई. में इसने वारंगल के शासक प्रतापरुद्र देव को पराजित कर दिया। प्रताप रुद्र देव ने अपने सोने की मूर्ति बनाई और उसमें जंजीर पहनाकर अलाउद्दीन को भेजा और साथ ही कोहिनूर हीरा भी भेजा एवं अधीनता स्वीकार कर ली।
- ❖ 1310 ई. में मजिलक काफूर ने होयशल वंश पर आक्रमण किया किन्तु उसकी राजधानी द्वारसमुद्र को नहीं जीत सका।
- ❖ 1311 ई. में मलिक काफूर ने पांड वंश की राजधानी मदुरै जीत ली।
- ❖ अलाउद्दीन जब निजामुद्दीन औलिया से भूमि का हिसाब मांगा तो उसने कहा कि "मेरे घर में 10 दरवाजे हैं"।

अलाउद्दीन के 4 प्रमुख सेनापति-

- (i) जफर खां
 - (ii) नूरसत खां
 - (iii) उलुग खां
 - (iv) मलिक काफूर
- ❖ यह अपने चारों सेनापति की तुलना पैगम्बर के खलिफा से करता था।
 - ❖ मंगोलों से लड़ते समय जफर खां की मृत्यु हो गई थी।
 - ❖ 1316 ई. में अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु हो गई।
 - ❖ अलाउद्दीन खिलजी के समय मंगोल तथा सल्तनत के बीच सिंधु नदी को सीमा बनाया गया।
 - ❖ अलाउद्दीन खिलजी ने खलिफा के आदेशों की अवहेलना कर दी।
 - ❖ इतिहासकार बरनी कहते हैं कि जब अलाउद्दीन शासक बना तो इस्लामिक कानून (सरियत) से खुद को मुक्त घोषित कर दिया और एक नए धर्म प्रारंभ करने का प्रयास भी किया।
 - ❖ अलाउद्दीन खिलजी तुर्क कबीले का था। इसने सैनिकों के लिए वेश-भूषा (ड्रेस) का निर्धारण किया।
 - ❖ यह सल्तनत काल पहला शासक था जिसने भूमि की पैमाईश (माप) करवाया और उसी आधार पर लगान (tax) का निर्धारण किया।
 - ❖ इसने कुल उपज का 50% कर के रूप में निर्धारित किया।

- ❖ कर चोरी को रोकने के लिए इसने प्रांतों के गवर्नर की शक्ति को समाप्त कर दिया।
- ❖ इसने दक्षिण भारत अभियान केवल धन लूटने के लिए किया। यह जिम्मेदारी उसने मलिक काफूर को दी।

कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी- (1316 ई.-1320 ई.)

- ❖ इसने खलीफा के पद को मान्यता नहीं दी।
- ❖ यह दरबार में कभी-कभी महिलाओं के वस्त्र पहन कर आ जाता था एवं कभी-कभी निर्वस्त्र आ जाता था।
- ❖ खुसरो खां ने 1320 ई. में इसकी हत्या कर दी।
- ❖ खिलजी वंश का सेनापति गाजी मलिक ने खुसरो खां की हत्या कर दी और खुद शासक बन गया।
- ❖ इस प्रकार खिलजी वंश का अंत हो गया।
- ❖ खिलजी वंश का कार्य-काल सबसे छोटा था।
- ❖ खिलजी वंश के शासक निम्न कबीले से संबंध रखते थे।

तुगलक वंश (1320.1414 ई.)

ग्यासुद्दीन तुगलक

- ❖ गाजी मलिक ने तुगलक वंश की स्थापना की और ग्यासुद्दीन तुगलक के नाम से अपना राज्याभिषेक करवाया।
- ❖ यह किसानों की सहायता के लिए नहर निर्माण का कार्य प्रारंभ किया, हालांकि नहरों का जाल फिरोजशाह तुगलक ने बिछा दिया।
- ❖ ग्यासुद्दीन तुगलक ने अपना पहला अभियान जौनाखान के नेतृत्व में तेलंगाना के लिए किया।
- ❖ जौना खान ने तेलंगाना जीतकर उसका नाम सुल्तानपुर रख दिया।
- ❖ इस विजय के बाद जौना खान को मोहम्मद बिन तुगलक कहा गया।
- ❖ ग्यासुद्दीन तुगलक ने खुद के नेतृत्व में बंगाल अभियान किया, किन्तु बंगाल से इसे धन की प्राप्ति नहीं हुई।
- ❖ इसने निजामुद्दीन औलिया को संदेश भिजवाया कि मेरे दिल्ली पहुंचने तक दान में दी गई भूमि का हिसाब तैयार रखे।
- ❖ इसके उत्तर में निजामुद्दीन औलिया ने कहा कि "हुजुर दिल्ली अभी दूर है।"
- ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक ने U.P. के अफगानपुर में ग्यासुद्दीन तुगलक के विश्राम के लिए लकड़ी का महल बनवाया किन्तु इस महल के गिरने से ग्यासुद्दीन तुगलक की मृत्यु हो गई।

मोहम्मद-बिन-तुगलक

- ❖ इसका मूल नाम जौना खां था।
- ❖ यह 23 भाषाओं का अच्छा जानकार था, साथ ही ज्योतिष, खगोल तथा गणित का भी अच्छा विद्वान था।

- ❖ यह इतिहास में सबसे पढ़ा-लिखा शासक था।
- ❖ इसके समय सल्तनत काल का विकास बहुत तेजी से हुआ, साथ ही बिखराव भी तेजी से हुआ।

मोहम्मद-बिन-तुगलक ने 5 सबसे बड़ी गलतियाँ की-

- (1) इसने दोआब पर तब tax बढ़ा दिया जब वहाँ अकाल पड़ा था।
किसानों के विद्रोह के कारण इसने अमिर कोहि नामक विभाग बनाया जो किसानों की मदद के लिए था।
 - (2) इसने ताँबे की सांकेतिक मुद्रा चलवायी, किन्तु इस मुद्रा का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग होने लगा।
 - (3) इसने मंगोल आक्रमण के डर से तथा दक्षिण में इस्लाम के प्रसार के लिए राजधानी देव गिरि (दौलताबाद) में स्थानांतरित की जो असफल रहा।
 - (4) इसने खुरासान (इरान) पर आक्रमण के लिए 3 लाख सैनिकों की फौज बनायी और उन्हें अग्रीम वेतन भी दिया, किन्तु अंतिम समय में वह खुरासान के शासक से संधि कर लीया।
 - (5) इसने सैनिकों के विद्रोह से बचने के लिए उन्हें हिमालय की दुर्गम्य चोटी कराचील अभियान के लिए भेजा जहाँ अधिकांश सैनिक आपसी विवाद में लड़कर मर गए।
- ❖ 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर विजय नगर की स्थापना कर ली।
 - ❖ 1347 ई. में हसन गंगु ने दिल्ली सल्तनत से टूट कर बहमनी साम्राज्य की स्थापना कर ली।
 - ❖ 1333 ई. में मोरक्को (अफ्रीका) का यात्री “इब्नबतुता” 7000 km की यात्रा के बाद दिल्ली पहुँचा।
 - ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक इसकी विद्वता से खुश हुआ और उसे दिल्ली का काजी (जज) नियुक्त किया।
 - ❖ इब्नबतुता के कहने पर ही M.B.T. ने डाक-विभाग प्रारंभ किया।
 - ❖ इब्नबतुता के नेतृत्व में M.B.T. ने एक दूत मंडल चीन भेजा।
 - ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक होली का त्योहार अपने दरबार में मनाता था।
 - ❖ मोहम्मद-बिन-तुगलक का कहना था कि मेरा राज्य रूग्न (बीमार) हो चुका है।
 - ❖ M.B.T. की मृत्यु पर इतिहासकारों का कहना है कि जनता को अपने राजा से एवं राजा को अपनी जनता से छुटकारा मिल गया।

फिरोज-शाह-तुगलक

- ❖ यह जौना खाँ का चचेरा भाई था। इसकी माता सोनार थी। अतः इस पर हिन्दु होने का आरोप न लगे इसलिए इसने ब्राह्मणों पर भी जजीया कर लगा दिया।
- ❖ इसने अशोक के हरियाणा के टोपरा अभिलेख को तथा U.P.

के मेरठ अभिलेख को दिल्ली में स्थापित कर दिया।

- ❖ इसने अलग से एक निर्माण विभाग बनवाया और 300 से अधिक नगर (शहर) का निर्माण कराया।
- ❖ जैसे— जौनपुर, फिरोजाबाद, फैजाबाद।
- ❖ इसने 1200 से अधिक फलों के बाग-बगीचे लगवाए ताकि फलों की गुणवत्ता को सुधारा जा सके।
- ❖ इसने नहरों का जाल बिछा दिया।
- ❖ जो किसान सरकारी नहर से खेती करता था उसे “हक-ए-शर्ब” नामक कर देना होता था, जो कुछ ऊपज का 10% या 1\10 भाग देना होता था।
- ❖ F.S.T. के दरबार में सर्वाधिक दास 1 लाख 80 हजार थे।
- ❖ इसने दासों की देखभाल के लिए एक अलग विभाग “दिवान-ए-बंदगान” बनाया।
- ❖ इसने बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता भी दिया।
- ❖ गरीब, असहाय तथा अनाथ की सहायता के लिए इसने एक अलग विभाग दिवान-ए-खैरात बनवाया।
- ❖ इसने दर-ऊल-शफा नामक एक मुफ्त अस्पताल बनवाया।
- ❖ इसने सरकारी खर्च पर हज यात्रा करवायी।
- ❖ विभिन्न धर्मों में आपसी समन्वय के लिए इसने एक अनुवाद विभाग बनवाया।
- ❖ F.S.T. को सल्तनत काल का अकबर कहते हैं।

नसीर-उ-द्दीन महमूद

- ❖ नसीरुद्दीन महमूद के समय तुगलक वंश का बिखराव बहुत तेजी से होने लगा।
- ❖ इसके बारे में कहा जाता है कि इसका साम्राज्य दिल्ली से पालम तक था।
- ❖ इसके पंजाब का सूबेदार खिज़्र खाँ ने खुद को स्वतंत्र घोषित कर दिया।
- ❖ 1398 ई. में मिशोल सेनापति तैमूर लंग ने इस पर आक्रमण किया।
- ❖ तैमूर लंग के डर से यह दिल्ली छोड़ के भाग गया।
- ❖ तैमूर लंग ने खिज़्र खाँ को दिल्ली का सूबेदार नियुक्त किया।
- ❖ तैमूर के आक्रमण से तुगलक वंश का अंत हो गया। इस प्रकार इस वंश का अंतिम शासक नसीरुद्दीन महमूद था।
- ❖ 1414 ई. में खिज़्र खाँ ने इसकी हत्या कर दी।

सैय्यद वंश (1414-1451)

- ❖ सैय्यद वंश के संस्थापक खिज़्र खान थे।
- ❖ खिज़्र खान को तैमूर लंग ने दिल्ली का सूबेदार बनाया था।
- ❖ खिज़्र खाँ ने कभी-भी सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की।
- ❖ इस वंश का शासक मुबारक शाह ने सुल्तान की उपाधि धारण की।

- ❖ इस वंश का अंतिम शासक अलाउद्दीन आलम शाह था।
- ❖ 1451 ई. में बहलोल लोदी ने इसकी हत्या कर दी और लोदी वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ सैय्यद वंश के काल को मकबरा निर्माण का काल कहते हैं।
- ❖ पहली बार मकबरा का निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया, किन्तु शुद्ध इस्लामिक पद्धति पर मकबरा का निर्माण बलबन ने बनवाया था।

लोदी वंश (1451-1526)

- ❖ यह भारत का पहला शुद्ध अफगान वंश था।
- ❖ इस वंश के संस्थापक बहलोल लोदी थे।
- ❖ यह अपने दरबारियों के सम्मान में खड़ा रहता था और उनके बैठने के बाद बैठता था।
- ❖ इसने जौनपुर पर आक्रमण करके उसे जीत लिया।
- ❖ इसने एक सिक्का चलाया जिसे बहलोली सिक्का कहते हैं।
- ❖ बहलोली सिक्का अकबर के काल तक प्रचलन में था।
- ❖ अगला शासक सिकंदर लोदी बना। यह इस वंश का सबसे योग्य शासक था।
- ❖ इसने 1504 ई. में आगरा शहर की स्थापना की।
- ❖ इसने गुलरूखी नामक पत्रिका लिखी।
- ❖ इसने जमीन की पैमाईश के लिए गज-ए-सिकन्दरी नामक एक मापक बनाया।
- ❖ इसने खाद्यान्न (खाद्य पदार्थ) से कर हटा लिया।
- ❖ इसने ताजिया निकालने तथा महिलाओं के मजार पर जाने पर प्रतिबंध लगा दिया।
- ❖ इस वंश का अंतिम शासक इब्राहिम लोदी था।
- ❖ इसे 1518 ई. में खतोली के युद्ध में राणा सांगा ने पराजित कर दिया।
- ❖ इब्राहिम लोदी के संबंधी आलम खान लोदी एवं दौलत खान लोदी ने इब्राहिम लोदी को मारने के लिए बाबर को आमंत्रित किया।
- ❖ पानीपत के प्रथम युद्ध 1526 ई. में बाबर ने इब्राहिम लोदी की हत्या कर दी और लोदी वंश के स्थान पर मुगल वंश की स्थापना कर दी।
- ❖ इब्राहिम लोदी दिल्ली सल्तनत का एकमात्र शासक था जिसे युद्ध के मैदान में मार दिया गया।

दिल्ली सल्तनत की सांस्कृतिक व्यवस्था-

- ❖ दिल्ली सल्तनत पर इस्लामिक कानून लागू थे। किन्तु अधिकांश जनसंख्या मुसलमान नहीं थी। इसी कारण इतिहासकार बरनी ने सल्तनत काल को वास्तविक इस्लाम नहीं कहा है सल्तनत काल के अधिकतर अधिकारी अमीर तथा सुल्तान तुर्क कबीले के थे।

- ❖ **वित्तीय व्यवस्था**— इस समय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि एवं व्यापार था।
इस समय 5 सबसे प्रमुख कर थे—
(i) उश्र
(ii) मुत्तई
(iii) खराज
(iv) चरी
(v) घरी।
नोट— खुम्स को मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह लूट का धन था।
- ❖ जजिया, जकात को भी मुख्य राजस्व नहीं मानते थे, क्योंकि यह धार्मिक कर था।
- ❖ Tax कर वसूलने वाला सबसे छोटा ग्रामिक अधिकारी चौधरी होता था, जबकि सबसे बड़ा अधिकारी इक्तादार होता था।
- ❖ जब इक्तादार निश्चित tax से भी अधिक tax वसूल कर देता था, तो इस अतिरिक्त आय को फवाजिल कहा जाता था।
- ❖ Tax वसूलने में हो रहे भ्रष्टाचार के निगरानी के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने दिवान-ए-मुस्त खराज नामक विभाग बनवाया।
- ❖ सल्तनत काल में टाका तथा जितल ही प्रमुख सिक्के थे जिसे इल्तुतमिश ने चलाया।
- ❖ गुलाम वंश के शासक अलाउद्दीन महमूद शाह ने अपने सिक्के पर खलिफा का चित्र बनवाया।

सल्तनत कालीन धार्मिक व्यवस्था-

- ❖ **जाबिद**— राज्य के कानून को जाबिद कहते थे।
- ❖ **सरियत या हदिस**— धार्मिक कानून को सरियत या हदिस कहा जाता था।
- ❖ **दिवान-ए-रिसालत**— ये धार्मिक मामलों की जाँच करते थे।
- ❖ **दस्ताव वन्दान**— ये उलेमाओं का समूह था, जो सर पर साफा (पगड़ी) बाँधते थे।
उच्च धार्मिक गुरुओं को उलेमा कहते हैं।

सल्तनत कालीन स्थापत्य या वास्तुकला-

- ❖ भवन निर्माण की कला को स्थापत्य कला कहते हैं।
- ❖ घोड़े के नाल के आकार की मेहराब की आकृति (निर्माण) सर्वप्रथम अलाउद्दीन खिलजी ने अलाई दरबार में की।
- ❖ अष्टभुजी मकबरा का निर्माण तुगलक काल में हुआ। गयासुद्दीन तुगलक ने तुगलकाबाद शहर बसाया।
- ❖ बड़े आकार के मेहराब (दिवाल) का निर्माण खिलजी वंश में हुआ।
- ❖ बलबन पहला ऐसा सुल्तान था, जिसका मकबरा शुद्ध इस्लामिक पद्धति में बना।

सल्तनत कालीन साहित्य-

- ❖ सल्तनत काल में फारसी भाषा का प्रचलन था।
- ❖ सल्तनत काल के सबसे बड़े कवि अमीर खुसरो थे, जिन्हें मंगोलो ने बंदी बना लिया था, किन्तु वो वहाँ से भाग गए।
- ❖ ये बलबन से लेकर मोहम्मद-बिन-तुगलक तक कुल 7 राजाओं के दरबार में रहे थे।
- ❖ इन्हें अपने दरबार में सरंक्षण अलाउद्दीन-खिलजी ने दिया।
- ❖ ये हिन्दी, फारसी तथा खरी बोली के जानकार थे।
- ❖ इन्होंने सर्वाधिक रचनाएँ खरी बोली में की है।
- ❖ इनकी सबसे प्रमुख रचना तारीख-ए-दिल्ली है। इन्हें तोता-ए-हिन्द कहते हैं।
- ❖ ये निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे। इन्होंने तबला तथा सितार का आविष्कार किया।
 - (i) सितार को हिन्दू-मुस्लिम का मिश्रण कहते हैं।
 - (ii) सल्तनत काल का एकमात्र सुलतान फिरोज-शाह तुगलक था, जिसमें अपनी आत्मकथा लिखी। जिसे फतुहात-ए-फिरोजशाही कहते हैं।

